Deg-2
HIJH-03 P-III

फिरोज के उत्तराधिकारी

फिरोज की मृत्यु के बाद तुगलक शाह, गियासुद्दीन तुगलक शाह द्वितीय के नाम से सिंहासन पर आसीन हुआ, परन्तु शीघ्र ही 19 फरवरी 1389 को वह षड्यंत्र का शिकार हो गया। उसके स्थान पर तुगलक शाह का चचेरा भाई ~~अबूबक~~ अबूबक्र सुल्तान बना, लेकिन उसी समय नसीरुद्दीन मोहम्मद ने भी स्वयं को सुल्तान घोषित कर दिया। अबूबक्र को नसीरुद्दीन मोहम्मद के समक्ष 1390 में समर्पण करना पड़ा, लेकिन नसीरुद्दीन भी खराब स्वास्थ्य के कारण 1394 जनवरी तक ही जीवित रह सका। इसके पश्चात उसका पुत्र हुमायूँ सिंहासन पर बैठा, परन्तु वर्ष ~~6~~ वर्ष मार्च में मर गया। तुगलक वंश का अंतिम शासक मुहम्मद का पुत्र नसीरुद्दीन महमूद था। नसीरुद्दीन महमूद ने मलिक सरवर को मलिक-उस-शर्क की उपाधि दी जिसने स्वतंत्र जौनपुर राज्य की नींव रखी। नसीरुद्दीन महमूद के ही समय में खोखरों ने उत्तर में विद्रोह किया। गुजरात, मालवा और खानदेश स्वतंत्र हो गए, बयाना और कालपी से मुसलमानों का शासन समाप्त हो गया और ग्वालियर से हिन्दुओं का इसके अतिरिक्त दोआब में विद्रोह हुए।

इस प्रकार चौदहवीं शताब्दी के अंत में दिल्ली सल्तनत की स्थिति

P.T.O

काफी दयनीय थी। नसीरुद्दीन महमूद के शासनकाल में ही 1398 ई० में तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया जिससे सल्तनत की जर्जर स्थिति स्पष्ट होती है।

दिसम्बर 1398 ई० में तैमूर की सेनाएं दिल्ली तक आ पहुंची और तैमूर ने नगर में कत्ले-आम का आदेश दे दिया। तैमूर के हाथों पराजित होने पर तुगलक सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद दिल्ली की मासूम जनता को दरिंदो के हाथ कटने के लिए छोड़कर भाग गया। तीन-चार दिनों तक लूट और कत्लेआम चलता रहा। 1399 में तैमूर ने दिल्ली छोड़ी पर उसने भारत पर विपत्तियों का जो कहर बरसाया ऐसी दुर्दशा केवल मात्र एक आक्रमणकारी द्वारा के दौरान किसी भी विदेशी आक्रमणकारी द्वारा कभी भी नहीं की गई थी।